उत्तर प्रदेश एवं बिहार में बच्चों में निमोनिया के प्रबन्धन हेतु घरेलू निर्णय क्षमता को विकसित करना

12 केस स्टडीज़ का वर्णन

केस की सामाजिक स्थिति - जनसाँख्यिकीय विशिष्टताऐं

क्र.सं.	राज्य	क्षेत्र	जिला जिस में बच्चा रहता है	बच्चें का लिंग	बच्चे की आयु (महीनों में)
1.	उत्तर प्रदेश	शहरी	लखनऊ	पुरूष	2
2.	उत्तर प्रदेश	शहरी	सीतापुर	स्त्री	4
3.	उत्तर प्रदेश	ग्रामीण	गोण्डा	स्त्री	9
4.	उत्तर प्रदेश	ग्रामीण	रायबरेली	पुरूष	2
5.	उत्तर प्रदेश	ग्रामीण	बहराइच	पुरूष	60
6.	बिहार	ग्रामीण	दरभंगा	पुरूष	12
7.	बिहार	ग्रामीण	मधुबनी	पुरूष	5
8.	उत्तर प्रदेश	ग्रामीण	गोरखपुर	पुरूष	27
9.	उत्तर प्रदेश	ग्रामीण	महोबा	पुरूष	18
10.	बिहार	ग्रामीण	गया	पुरूष	14
11.	बिहार	ग्रामीण	गया	पुरूष	4
12	उत्तर प्रदेश	ग्रामीण	मेरठ	स्त्री	2

बिहार — 4/12 केस (पुरूष 4/4 :स्त्री 0/4)
उत्तर प्रदेश— 8/12 (पुरूष 5/8 : स्त्री 2/8)
शहरी — 2/12 केस
ग्रामीण —10/12 केस

निमोनिया केस स्टडीस

केस– 01

विशिष्ट आई डी: उ0प्र0 /केस स्टडी/ 01 **जिला: शहरी लखनऊ**

यह दो माह का शिशु अपने माता–पिता और बहनों के साथ इन्द्रानगर (उत्तर भारत के लखनऊ शहर) में रहता है। वह लखनऊ मेडिकल कॉलेज के बाल रोग विभाग में भर्ती हुआ था। माँ ने शिशु की बीमारी के बारे में लिखित सूचना दी।

बच्चे की माँ ने बताया कि बच्चा भर्ती होने के एक दिन पहले से बीमार नहीं था, परन्तु उसने दोपहर से ही स्तनपान करना बंद कर दिया था, और इसे थोड़ी सी खाँसी भी आ रही थी। माता–पिता ने उसे गंभीरता से नहीं लिया क्योंकि उनकी दो लड़कियाँ पहले से ही सर्दी और खाँसी से पीड़ित थीं। इसलिए वे उसे बोतल से दूध पिलाने का प्रयत्न करने लगे। जिस दिन शिशु को भर्ती करना था, उस दिन सुबह चार बजे बच्चे से पिता ने नोटिस किया बच्चा बेचैन हो रहा है, तथा पसली चलने के साथ–साथ उसके साँस लेने की गति भी बढ़ रही है। उस समय अँधेरा था और परिवार के पास कोई साधन भी नहीं था जिससे वह शिशु को अस्पताल ले जा सके जो उनके घर से 7 किमी दूर था। उसी दिन घर का सभी काम पूरा करके सुबह 8 बजे माता–पिता बच्चे को मेडिकल कॉलेज के बाल रोग विभाग के वाह्य रोगी विभाग में दिखाने को ले गये। जहाँ पहुँचने में उन्हें लगभग 1 घण्टा लगा। अस्पताल से बच्चे का परीक्षण करने के बाद डॉक्टरों ने परिवार के लोगों को बताया कि बच्चा निमोनिया से पीड़ित है, और इसे बाल रोग विभाग में भर्ती करने की आवश्यकता है। पिता ने बच्चे को मेडिकल कॉलेजा में भर्ती करने का निर्णय किया क्योंकि इसके अलावा उनके पास और कोई रास्ता भी नहीं था।

परिवार के सदस्यों ने बीमारी के दौरान किसी अन्य अस्पताल और किसी अन्य चिकित्सक से सलाह भी नहीं ली। परिवार के सदस्यों ने अपने आप दवा भी नहीं दी या घरेलू चिकित्सा भी नहीं की। चिकित्सको की सलाह पर पिता अपनी दोनों लडकियों को भी वाह्य चिकित्सा विभाग में इलाज के लिए ले गया। दोनों की सर्दी, खाँसी के लिए उनका परीक्षण किया गया और उन्हें खाने के लिए दवांये दी गयीं।

जानकारी का सारांश :–

- पहला लक्षण जानने के बाद मेडिकल कॉलेज में भर्ती करने के बीच लगभग 22 घण्टे का समय बर्बाद हुआ।
- क्रमवार स्वास्थ्य सुविधा/ उपचारक जिनसे परामर्श लिया गया
  1-6 दिन सरकारी अस्पताल : किंग जार्ज मेडिकल विश्वविद्यालय लखनऊ
- शिशु के घर से आखिरी चिकित्सा प्राप्त करने के स्थान की दूरी : 7 किमी

क्यों चुना

- स्तनपान से मना करने पर भी परिवार का लक्षण नहीं पहचानना, जो देरी का कारण बना

- बीमारी को सर्दी और खाँसी से कनफ्यूज होना देरी का कारण बना
- साधन का ना होना– देरी का कारण
- रात का समय होना– देरी का कारण
- परिवार के ऊपर दूसरी जिम्मेदारियों का होना– देरी का कारण
- पिता का प्रोत्सहित होकर दूसरे बच्चों को दिखाना– सकारात्मक व्यवहार

केस–02

विशिष्ट आई डी: उ0प्र0 /केस स्टडी/ 04 **जिला :शहरी सीतापुर**

यह चार माह की बच्ची अपने माता–पिता के साथ सीतापुर जिले के शहरी क्षेत्र में रहती है। बच्ची को के0जी0एम0यू0 के बाल रोग विभाग में भर्ती करने के लिए रेफर किया गया था। माँ ने बीमारी के बारे में पूरी बातें बतायीं।

माँ ने सूचित किया कि पहले बच्ची पूरी तरह से स्वस्थ थी, 10 दिन पहले अचानक खाँसी और कम बुखार के लक्षण दिखाई दिये। अगले दो दिनों तक माता– पिता ने किसी भी चिकित्सक से सलाह नहीं ली, चूंकि मां खुद ही बुखार से पीड़ित थी इसलिए वे सोच रहे थे कि बच्ची को बुखार माँ के स्तनपान कराने से हुआ है। उन्होंने माँ को बच्ची से दूर रखना शुरू किया। परिणाम स्वरूप उसने बच्ची को जन्म घुट्टी या ग्राइप वाटर देना शुरू किया। शीघ्र ही बच्ची का डाइरिया और बुखार कम हुआ। बीमारी के तीसरे दिन, पिता बच्ची को झोलाछाप डॉक्टर के पास ले गये, उन्होंने कहा चिंता की कोई बात नहीं है और इब्यूजेसिक (एण्टी पाइरेटिक/एण्टी इन्फ्लेमेटरी) सिरप (पेडिक्लोरिल) दिया। उसी दिन शाम को उसकी साँस तेजी से चलने लगी, और पसली चलने लगी। तब पिता ने उसे खैराबाद ब्लाक के प्राइवेट अस्पताल में ले जाने का निर्णय लिया। जो उनके घर से 60 किमी दूर था वहाँ वह उसे कार से ले गये। वे प्राइवेट अस्पताल लगभग 2 घंटे में पहुँच गये। वहाँ चिकित्सकों ने बताया कि बच्ची को साँस संबंधी बीमारी है और उसे वेन्टीफिलीन और बेटनेसॉल दिया तथा कुछ दवाइयाँ चढाई। बच्चे को 2 दिन बाद अस्पताल से छुट्टी होने के 6 घटे बाद जब वह घर पर थी, उसकी दशा फिर से बिगड़ गयी। उसे फिर से साँस लेने में परेशानी तथा तेज बुखार हो गया, इसलिए पिता उसे लखनऊ में प्राइवेट अस्पताल ले गये जिसके लिए उनके पड़ोसियों ने उन्हें कहा था कि उस अस्पताल में सरकारी अस्पताल की अपेक्षा अधिक अच्छी सुविधा और अधिक ध्यान दिया जायेगा। इस यात्रा को पूरा करने में 4 घटे का समय लगा।

उस अस्पताल में उसे कुछ दवाइयाँ चढ़ाई गई, तथा ऑक्सीजन मास्क लगाया गया। एक्स–रे किया गया और उसके बाद डॉक्टरों ने बताया कि वह तीव्र निमोनिया से पीड़ित है। उसे वेन्टीलेटर की जरूरत है, जो वहाँ नहीं था। इसलिए बच्चे को लखनऊ मेडिकल कॉलेज के बाल रोग विभाग में रेफर कर दिया गया। पिता ने उनकी सलाह मान ली, 7 घंटे रूकने के बाद उसे लगभग 90 मि0 में एम्बुलेन्स द्वारा मेडिकल कॉलेज लाया गया। यहाँ जाँच करने के बाद डॉक्टरों ने निमोनिया को निशिचित किया, उसे भर्ती कर लिया और उसका उनकी निगरानी में इलाज चलने लगा।

जानकारी का सारांश :–

1. पहला लक्षण प्रकट होने से मेडिकल कॉलेज में भर्ती होने के बीच 10 दिन का समय बीत गया।
2. क्रमवार स्वास्थ्य सुविधा/ उपचारक जिनसे परामर्श लिया गया:

   दिन 1 और 2 : घर में अपने आप कोई दवा नहीं दी ना कोई घरेलू चिकित्सा सिर्फ अपने आप बीमारी के कम होने का इंतजार ।

दिन 3 : झोलाछाप डॉक्टर (10 घंटे)

दिन 4–5 : प्राइवेट अस्पताल खैराबाद (बच्चे के घर से 60 किमी)

दिन 6 : लखनऊ में प्राइवेट डॉक्टर के पास

दिन 7–10 : सरकारी अस्पताल, लखनऊ मेडिकल कॉलेज में

3. बच्चे के घर से आखिरी चिकित्सा सुविधा तक दूरीः 128 किमी

क्यों चुना

- देखभालकर्ता सिर्फ इंतजार करते रहे। उन्हें लगा बीमारी बच्चे को माँ का दूध पीने से हुयी है। पिता के द्वारा देरी करने के कारण बीमारी बढ़ी।
- छुटकारा पाने के लिए घरेलू इलाज जैसे घुट्टी –देरी का कारण ।
- लक्षण जल्दी प्रकट हुए पर चिकित्सक पहचान नहीं पाए, बुखार के लिए दवा दी, तथा सोने की दवा दी।
- बच्चे को जिले के एक प्राइवेट अस्पताल से लखनऊ में दूसरे प्राइवेट अस्पताल ले जाया गया। अधिक दूरी तय करना और भर्ती में होने वाली औपचारिकता देरी का कारण।
- बच्चे को प्राइवेट अस्पताल से सरकारी अस्पताल में सुविधाओं की कमी जैसे वेंटीलेटर के कारण रेफर किया गया।

केस–03

विशिष्ट आई डी: उ0प्र0 /केस स्टडी/ 05 **जिला: ग्रामीण क्षेत्र गोण्डा**

यह 9 माह की बच्ची अपने माता–पिता, दादा–दादी और बड़े भाई के साथ में रहती है। माँ के अनुसार 8 माह के गर्भ के बाद बच्ची ने घर पर ही दादी की सहायता से सामान्य प्रसव के साथ जन्म लिया और वह जन्म के समय से ही कमजोर थी। परन्तु उसे परीक्षण के लिए कभी भी किसी अस्पताल नहीं ले जाया गया क्योंकि उसके दादा–दादी के अनुसार उसको नज़र लग सकती है। माँ बच्ची को भैंस का दूध पिलाती थी, इसके अतिरिक्त शहद, जड़ी बूटियों का रस देती थी और सोचती थी इससे वह शक्तिशाली हो जायगी तथा उसका वजन भी बढ़ जायेगा। परन्तु समय बढ़ने के साथ–साथ वह और कमजोर होती गयी तथा उसे खाँसी, डायरिया लगभग प्रत्येक महीनें में 2–3 बार होने लगा। माँ उसे घरेलू उपचार में शहद और अदरख का पेस्ट देती थी क्योंकि उसे विश्वास था कि यह बच्ची के स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। उसे लगता था कि धीरे–धीरे उम्र बढ़ने के साथ–साथ वह ठीक होती जायेगी।

माँ ने बताया कि बच्ची तेज बुखार, खाँसी और चिल्लाने के लगभग 7 दिन पहले ठीक थी। दादा–दादी की सलाह पर पिता बच्ची को ओझा के पास नज़र उतारने के लिए ले गए। जब उसे कोई फायदा नहीं हुआ, तो शाम को पिता उसे झोलाछाप डॉक्टर के पास ले गया, जिसने उसे पैरासीटामॉल सिरप (एण्टी पाइरेटिक), पेडिक्लोरिल सिरप (सेडेटिव) दिया। अगली सुबह माँ ने यह देखा कि बच्ची को तेज बुरवार, तेज साँस तथा पसली चल रहीं थीं। बच्ची ने रवाना-पीना बन्द कर दिया था । तब पिता उसे अपने घर से 10 किमी दूर एक प्राइवेट चिकित्सक के पास मोटर साइकिल से ले गये। इसमें उन्हें 20 मिनट लगे । प्राइवेट चिकित्सक ने बताया कि बच्ची गम्भीर निमोनिया से पीड़ित है उसे भर्ती करवाने की आवश्यकता है । बच्ची को कुछ खाने की दवाइयाँ तथा नस के अन्दर से इंजेक्शन दिये। भर्ती करने के 12 घंटे बाद उसका बुखार कम हुआ, चैतन्य हुयी तथा दूध पीना शुरू कर दिया। अपने काम में ना पहुँच पाने के कारण बच्ची के पिता उसके इलाज का खर्चा नहीं उठा पा रहे थे, वे बच्ची को भर्ती करने के 20 घण्टे के बाद वापिस घर ले आये। घर वापिस लाने के 1 दिन बाद उसकी स्थिति फिर से खराब होने लगी। बुखार बढ़ गया, साँस तेजी से चलने लगी उसने दूध पीना बंद कर दिया। माँ ने उसके ठंडे पानी की पट्टी भी रखी परन्तु बुखार पर बहुत थोड़ा असर हुआ। तब उनके एक पड़ोसी ने उन्हें लखनऊ मेडिकल कॉलेज ले जाने की सलाह दी। उन्होने यह भी बताया कि मेडिकल कॉलेज में गरीबी रेखा के नीचे आने वाले लोगों को वित्तीय सहायता भी प्रदान की जाती है जिनके पास सरकार द्वारा दिया जाने वाला (बी.पी.एल.), कार्ड होता है। अतः माँ ने घर से 115 किमी दूर रेलगाड़ी द्वारा लखनऊ जाने का निश्चय किया। इस यात्रा में उन्हें लगभग 5 घंटे का समय लगा। लखनऊ मेडिकल कॉलेज में डॉक्टरों ने बच्ची के परीक्षण के बाद यह बता दिया कि इसे निमोनिया है, और माँ को बताया कि बच्ची को भर्ती करने की आवश्यकता है, वह इस बात से सहमत हो गयी।

जानकारी का साराशं :–

1. निमोनिया के लक्षणों का पता होने के बाद लखनऊ मेडिकल कॉलेज ले जाने के बीच 7 दिन का समय खत्म हुआ।
2. क्रमवार स्वास्थ्य सुविधा/ उपचारक जिनसे परामर्श लिया गया:
   a. पहले दिन की सुबह : ओझा द्वारा नजर उतरवाना।
   b. पहले दिन की शाम : झोलाछाप ।
   c. दूसरी दिन : घर से 10 किमी दूर प्राइवेट डॉक्टर।
   d. दिन 3–7 : सरकारी अस्पताल मेडिकल कॉलेज लखनऊ में।
3. बच्चे के घर से आखिरी चिकित्सा प्राप्त करने की दूरी : 115 किमी

क्यों चुना

- बच्चे को घर के बाहर ना ले जाना–देरी का कारण बना।
- घरेलू इलाज के द्वारा शक्ति और प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाना : देरी का कारक।
- बहुत से चिकित्सकों के पास बच्चे को ले जाना (a) ओझा (b) अप्रशिक्षित डॉक्टर (झोलाछाप) बच्चे को केवल पैरासीटेमॉल और नींद की दवा दी गयी। (c) प्राइवेट डॉक्टर।
- लक्षण खराब होते गये।
- पैसे की कमी और काम के कारण देर से ले जाना।
- माता–पिता ने देखा कि लक्षण खराब होते जा रहे हैं परन्तु वह निश्चय नहीं कर पाये कि कहाँ जाना चाहिये। पड़ोसियों ने सरकारी में दिखाने की सलाह दी– देरी का कारण।

केस–04

विशिष्ट आई डी: उ0प्र0 /केस स्टडी/ 09 **जिला: ग्रामीण क्षेत्रःरायबरेली**

यह 2 माह का शिशु रवैराना गाँव में अपने माता–पिता, दादा–दादी और चार बहनों के साथ रहता है। शिशु को लखनऊ मेडिकल कॉलेज के बाल रोग विभाग में भर्ती किया गया था। माँ ने लिखित सहमति देने के बाद शिशु की पूरी बीमारी के बारे में विस्तार से बताया, माँ के अनुसार शिशु लगभग 20 दिन पहले हल्के बुखार और खाँसी से पीड़ित था। माता–पिता ने सोचा शिशु को मौसमी बीमारी है और उन्होने कुछ नहीं किया। तीसरे दिन शिशु का बुखार बढ़ गया और उसने दूध पीना बंद कर दिया । माता–पिता ने सोचा ऐसा नजर लगने के कारण हुआ है। दूसरे दिन वह ओझा के पास झड़वाने के लिए गये। दूसरे दिन माँ ने देरवा कि बच्चे की साँस लेने की गति बढ़ गयी है। तब पिता ने बच्चे को अपने घर से 6 किमी दूर महाराजगंज में टैंपों द्वारा एक प्राइवेट अस्पताल ले जाने का निर्णय लिया। उन्होंने प्राइवेट अस्पताल ले जाने का निर्णय इसलिए लिया क्योंकि प्राइवेट में इलाज का खर्चा सरकारी की अपेक्षा अधिक होता है, इसलिए उनका विश्वास था कि वहाँ के डॉक्टर सरकारी डॉक्टरों से ज्यादा योग्य होते हैं। वहाँ पर चिकित्सकों ने बताया कि बच्चे को साइनोसाइटिस है, उसे सिफिक्सिम सिरप, पैरासीटामॉल सिरप (एण्टी पाइरेटिक), विक्स की भाप दी और घर वापिस भेज दिया।

शाम को बच्चे का बुखार कुछ कम हुआ, परन्तु साँस लेने में परेशानी बनी रही। रात में उसकी तबियत और बिगड़ गयी, उसके साँस लेने में आवाज आने लगी और उसने बोलना बंद कर दिया। एक बार फिर से बुखार बढ़ गया। तब उस समय सभी प्राइवेट अस्पताल बंद थे, वे जल्दी से उसे प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र ले गये जो उनके घर से 5 किमी दूर था। वे टैंपों से 10 मिनट में वहाँ पहुँच गये। डॉक्टरों ने बच्चे का परीक्षण किया और बताया कि वह तीव्र निमोनिया से पीड़ित है। उन्होंने उसे कुछ दवाइयाँ नसों के द्वारा दी , और लखनऊ मेडिकल कॉलेज में रेफर कर दिया जो उनके घर से लगभग 120 किमी दूर था। लखनऊ से रायबरेली के बीच पहली बस सुबह 6 बजे की थी। अतः पिता ने डॉक्टर से प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में शिशु को भर्ती करने का अनुरोध किया। डॉक्टर मान गये उन्होंने उसे ग्लूकोज चढ़ाया और दवाइयाँ दीं। उन्होंने मास्क के द्वारा ऑक्सीजन भी दी। उसकी साँस कुछ संभल गयी थी। प्राथमिक स्वास्थ्य केंन्द्र में भर्ती करने के 8 घंटे बाद उसे बस द्वारा लखनऊ मेडिकल कॉलेज ले जाया गया, यात्रा के दौरान 3 घंटे का समय लगा। वहाँ पर परीक्षण के दौरान निमोनिया की पुष्टि कर दी। बच्चे को आई0सी0यू0 में भर्ती कर दिया गया।

जानकारी का साराशं :–

1. पहले लक्षण के शुरू होने और मेडिकल कॉलेज में भर्ती के दौरान लगभग 20 दिन का समय खत्म हुआ।
2. क्रमवार स्वास्थ्य सुविधा/ उपचारक जिनसे परामर्श लिया गया :
    a. 1,2 दिनः बीमारी के खत्म होने का अपने आप इंतजार करना।

b. दिन 3 : ओझा।

c. दिन 4 : प्राइवेट अस्पताल महाराजगंज (6 किमी दूर)।

d. दिन 5 : सरकार द्वारा चलायी जाने वाली प्राथमिक चिकित्सा सुविधा।

e. दिन 6 : सरकारी अस्पताल (के0जी0एम0यू0) रेफर किया, अस्पताल में 14 दिन रूके।

3. बच्चे के घर से अखिरी चिकित्सा सुविधा तक जाने की दूरीः 120 किमी।

क्यों चुना

- देखभालकर्ता ने इंतजार किया, देखा और सोचा मौसमी होगा।
- देरी होने का कारकः बुरी नजर का झड़वाना ।
- ओझा।
- प्राईवेट अस्पताल के बारे में सकारात्मक सोच क्योंकि वहां अधिक फीस लगती है।
- प्राइवेट अस्पताल के बंद होने पर पी0एच0सी0 ले जाना।
- अधिक दूरी तय करना– देरी होने का प्रमुख कारक।
- पूरी रात बस का इंतजार करना देरी का कारक।

केस – 05

विशिष्ट आई डी: उ0प्र0 /केस स्टडी/ 08 **जिला: ग्रामीण क्षेत्र बहराइच**

यह 60 माह का शिशु ग्राम नन्दपारा, बहराइच में संयुक्त परिवार में अपने माता–पिता, दादा–दादी, भाई और चचेरे भाई बहनों के साथ रहता है। उसके परिवार में कुल 15 सदस्य हैं। शिशु को लखनऊ मेडिकल कॉलेज के बाल रोग विभाग में भर्ती किया गया है, शिशु के पिता ने उसकी पूरी जानकारी लिखित सहमति के द्वारा दी।

शिशु के पिता के अनुसार, माँ ने 4 दिन पहले देरवा कि बच्चा पहले की अपेक्षा कुछ कम ऐक्टिव है तथा उसे हल्का बुखार भी है। उसने इसके बारे में अपने परिवार के अन्य सदस्यों से बातचीत की। उन्होंने उसे दूध और मेवा देने की सलाह दी। परन्तु अगली सुबह उसका बुखार भी बढ़ गया अैर खाँसी शुरू हो गयी। उसकी दादी की सलाह से, उसे जड़ी–बूटियों से बना कर काढ़ा दिया गया परन्तु उसका भी कोई असर नहीं हुआ। दोपहर में उसे साँस लेने में परेशानी होने लगी, पसली चलने लगी और साँस लेने में आवाज आने लगी। इसे देख कर, बच्चे के पिता ने उसे अपने घर से कुछ दूरी (2 किमी) स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (सरकारी चिकित्सा सुविधा) में ले जाने का निर्णय लिया। वहाँ डॉक्टरों ने माता–पिता को सूचित किया कि शिशु तीव्र निमोनिया से पीड़ित है, उसे खाने के लिए दवाइयाँ एमॉक्सीक्लेव (एण्टीबायोटिक) और कोडीन सिरप (एण्टीटसिव) दिया और उसे लखनऊ मेडिकल कॉलेज जिसकी उनके घर से दूरी 150 किमी थी रेफर कर दिया।

पिता बच्चे को वापिस घर ले आये, चूकिं लखनऊ जाने के लिए अगली सुबह तक कोई ट्रेन नहीं थी। इसलिए उन्होंने रात भर उसे घर में ही रखने के लिए सोचा। क्योंकि उनका विचार था कि प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के डॉक्टर पूरी तरह से सक्षम नहीं हैं। चूंकि उन्हीं लोगों ने बच्चे को दूसरे अस्पताल रिफर कर दिया था। इसी बीच शिशु की स्थिति गंभीर होती गयी। उसने बात करना बंद कर दिया, और उसके साँस लेने की गति बढ़ती गयी।

अगली सुबह माता–पिता बच्चे को रेलगाड़ी से 3 घंटे में लखनऊ ले कर पहुँचे। यात्रा के दौरान उसकी साँस लेने की आवाजे सुनायी देने लगी और वह सुस्त हो गया। वे बच्चे को लखनऊ मेडिकल कॉलेज के बाल रोग विभाग में ले गये, वहाँ बच्चे की जाँचे करने के बाद डॉक्टरों ने निमोनिया बताया और उसे आगे के इलाज के लिए भर्ती कर लिया।

जानकारी का साराशं :–

1. निमोनिया के पहले लक्षण के अवगत होने के बाद से मेडिकल कॉलेज में भर्ती होने के बीच लगभग 4 दिन।
2. क्रमवार स्वास्थ्य सुविधा/ उपचारक जिनसे परामर्श लिया गया :
   a. 1 दिन: आहार परिवर्तन।
   b. 2 दिन: घरेलू उपचार 2 किमी दूर सरकारी प्राथमिक चिकित्सा सेवा का लाभ।

c. 3–4 दिन: सरकारी अस्पताल लखनऊ मेडिकल कॉलेज।

3. शिशु के घर से आखिरी चिकित्सीय सेवा के बीच 150 किमी दूरी।

क्यों चुना

- पूरे परिवार के सदस्यों से सलाह लेना।
- घरेलू उपचार का उपयोग- देरी से इलाज का कारक बना।
- शिशु को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया।
- घर से 150 किमी दूर रेफर किया गया।
- बच्चे को रेफर करने के बाद घर में रखना देरी का कारक बना।
- सरकारी सुविधा को नकारात्मक बताना।

केस–06

विशिष्ट आई डी: उ0प्र0 /केस स्टडी/ 16 **जिलाः ग्रामीण क्षेत्र दरभंगा**

यह 12 महीने का शिशु बिहार के दरभंगा जिले के कमतार थाना के अंर्तगत तेक्टार गाँव में रहता है। बच्चा अपनी माँ और दादी के साथ रहता है। बच्चे को दरभंगा मेडिकल कॉलेज के बाल रोग विभाग में भर्ती किया गया था। अपनी लिखित सहमति देने के बाद माँ ने बच्चे की बीमारी की पूरी जानकारी दी। शिशु की दादी भी जो साक्षात्कार के समय उपस्थित थी, ने भी कुछ जानकारियाँ दी। बच्चे के पिता दूर पंजाब में काम करते है। माँ ने सूचित किया कि बच्चा पहले ठीक रहता था, साक्षात्कार के 5 दिन पहले वह बीमार हुआ। बीमारी की शुरूआत में उसे खाँसी हुयी। उसे देख कर शिशु की माँ गाँव के मेडिकल स्टोर से कफ सिरप खरीद कर लायी और उसे बच्चे को दिया। दादी ने ठीक होने के लिए तुलसी और अदरक का रस दिया। किसी भी विधि ने काम नहीं किया। बाद में माँ और दादी शिशु को गाँव के डॉक्टर के पास ले गयी। उन्होंने बताया अब बीमारी और अधिक गंभीर हो गयी है, वह सिरप जिसे माँ मेडिकल स्टोर से खरीद कर लायी थी, उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उन्होंने तब दूसरी दवा दी। गाँव के डॉक्टर से इलाज तक का खर्चा 380 रू0 आया था ।

तीन दिन बीत जाने के बाद, साक्षात्कार वाली रात को, बच्चा अचानक रोने, काँपने और तेजी से साँस लेने लगा। बच्चे ने पूरी रात दूध नहीं पिया। माँ ने सरसों के तेल में लहसुन गरम करके मालिश की। रोज तेल से मालिश करने से सर्दी दूर हो जाती है। रात में बच्चे की माँ और दादी ने अपने एक रिश्तेदार जो कम्पाऊँडर थे, को बुलाया उन्होंने दरभंगा में प्राइवेट डॉक्टर से सलाह लेने को कहा। दूसरे चिकित्सक ने बच्चे का परीक्षण करने के बाद दवा दी और नेब्यूलाइजर (भाप) लेने को कहा। उन्होंने माँ और दादी को यह बता दिया कि शिशु निमोनिया से पीड़ित था और उसे तुरंत चिकित्सीय सुविधा के लिए भर्ती करने की आवश्यकता है। परन्तु बच्चे की माँ और दादी भर्ती करने के लिए तैयार नहीं थी। इसलिए वे घर वापिस आ गयी, पैसों और कपड़ों की व्यवस्था की और बच्चे को दरभंगा मेडिकल कॉलेज में भर्ती करने का निश्चय किया। बच्चे को भर्ती करने से पहले देखभालकर्ता उसे ओझा के पास ले गये, उसने भी बताया कि बच्चे के पेट में दर्द और बुखार था, उसे दरभंगा में किसी डॉक्टर के पास ले जाना चाहिये। परिवार के सदस्यों ने शिशु को दरभंगा के मेडिकल कॉलेज में भर्ती कर दिया था। साक्षात्कार के समय तक परिवार का इलाज, लाने ले जाने और अन्य खर्चों में लगभग 1700 रू0 खर्च हो चुका था।

जानकारी का साराशं :–

1. लक्षण के पता चलने और आखिरी चिकित्सा सेवा तक समय : 5 दिन
2. क्रमवार स्वास्थ्य सुविधा/ उपचारक जिनसे परामर्श लिया गया :
   a. 1–2 दिन : गाँव में झोलाछाप डॉक्टर से।
   b. 3–4 दिन : गाँव के बाहर दूसरे झोलाछाप डॉक्टर से।
3. बच्चे के घर से आखिरी चिकित्सा सेवा तक 20 किमी दूरी।

4. कुल खर्च लगभग: 2080 रू0।

क्यों चुना

- स्वयं उपचार।
- घरेलू उपचार।
- गाँव का झोलाछाप डॉक्टर।
- गाँव के डॉक्टर से तीन दिन इलाज (देरी)।
- इलाज ठीक नहीं था– सलाह लेने में देरी नहीं जानते थे कहाँ जाना है।
- ताँत्रिक के पास दिखाने जाना।
- रिश्तेदार कम्पाउन्डर से सलाह लेना– उसने दूसरे डॉक्टर के पास जाने की सलाह दी।
- प्राइवेट डॉक्टर ने भर्ती की सलाह दी।
- परिवार भर्ती को तैयार नहीं था वापिस आकर तैयारी की– देरी पैसों की कमी के कारण।

केस–07

विशिष्ट आई डी: उ0प्र0 /केस स्टडी/ 18 **जिलाः ग्रामीण क्षेत्र मधुबनी**

यह 5 माह का शिशु बिहार में मधुबनी जिले (दरभंगा के बगल का जिला) के पण्ड़ौर ब्लॉक में अपने माता– पिता और दादा–दादी के साथ रहता है। शिशु को दरभंगा मेडिकल कॉलेज में भर्ती किया गया था, जहाँ देखभालकर्ता को साक्षात्कार के लिए राजी किया। उसके पिता जो हाईस्कूल पास शिक्षित व्यक्ति हैं, पेशे से ड्राइवर है, उन्होने शोधकर्ताओं को बीमारी की पूरी जानकारी दी।

उसके पिता ने बताया कि बच्चा 5 दिन पहले बीमार हुआ। वह सर्दी का महीना था, जब पहली बार उन्होंने बीमारी का लक्षण देखा था। सबसे पहले उसे सर्दी के साथ खाँसी और बुखार हुआ। वह पूरी रात रोता रहा था। रात में उसके सरसों के तेल की मालिश की गयी परन्तु सुबह होते ही उसे तेज बुखार हो गया, तथा लगातार खाँसी आने के कारण वह अचेत हो गया।

सबसे पहले शिशु को गाँव के पास ही भगवतीपुर में प्राइवेट डॉक्टर को दिखाया गया। माता–पिता ने उस डॉक्टर का चुनाव किया क्योंकि उनके पास सीमित धन था, वह डॉक्टर कम फीस लेता था। साथ ही वह उनके घर के पास था । प्राइवेट डॉक्टर ने उन्हें मधुबनी जिले में स्थित सदर अस्पताल जो सरकारी था, तथा घर से उसकी दूरी 18 किमी थी वहां जाने की सलाह दी। बच्चे के माता–पिता और दादी ने उसे सदर अस्पताल ले जाने का निर्णय लिया, चूंकि बच्चे को प्राइवेट डॉक्टर के इलाज से बीमारी का छुटकारा नहीं मिला था। अस्पताल पहुँचने में उन्हें 90 मिनट का समय लगा, सरकारी डॉक्टरों ने शिशु को सिरप और इन्जेक्शन दिया। उस अस्पताल में बच्चा लगभग 2 घंटे रूका और अस्पताल के इलाज में लगभग 600 रू0 खर्च हुये।

सदर जिला अस्पताल में उसे कोई फायदा नहीं हुआ, वह लगातार खाँसता रहा। माता–पिता और दादा–दादी बच्चे को दूसरे सरकारी अस्पताल में जो पहले से 45 किमी दूर था में स्थानान्तरित करने का निर्णय लिया। वे बच्चे को लगभग 1200 रू0 की किराये की गाड़ी करके दरभंगा मेडिकल कॉलेज ले गये। बच्चा दरभंगा मेडिकल कॉलेज के बाल रोग विभाग में पिछले 3 दिनों से भर्ती है। साक्षात्कार के समय तक दवाओं में लगभग 3000 रू0 खर्च हो गये। माता–पिता महसूस कर रहे है कि अब उनका बच्चा आँशिक रूप से स्वस्थ है।

जानकारी का साराशं :–

1. पहले लक्षण के पता चलने और आखिरी चिकित्सा सेवा प्राप्त करने के बीच 5 दिन का समय बीत गया।
2. क्रमवार स्वास्थ्य सुविधा/ उपचारक जिनसे परामर्श लिया गया :
   a. दिन–1 गाँव में झोलाछाप डॉक्टर से।
   b. दिन–3 सरकारी अस्पताल गृह जनपद में (सदर अस्पताल)।
   c. दिन 4–5 बगल के जिले का सरकारी अस्पताल (दरभंगा मेडिकल कॉलेज)।

3. बच्चे के घर से आखिरी चिकित्सा सेवा प्राप्त करने के बीच की दूरी : 65 किमी।

4. लगभग 3600 रू0 खर्च हुए।

क्यों चुना

- घरेलू इलाज– मालिश आदि ।
- पास के गाँव में प्राइवेट डॉक्टर के पास गये ।
- जिला अस्पताल गये– कोई फायदा नहीं हुआ।
- जिला अस्पताल में भर्ती करने के घंटे भर के अन्दर दूसरी चिकित्सा सेवा दी।

केस–08

विशिष्ट आई डी: उ0प्र0 /केस स्टडी/ 20 **जिलाः ग्रामीण क्षेत्र गोरखपुर**

यह 27 माह का शिशु गोरखपुर में गोला ब्लाक के वारानगर गाँव में अपने माता–पिता के साथ रहता है। बच्चे के पिता प्राइवेट नौकरी में और माँ गृहणी है। उसे पहले लखनऊ मेडिकल कॉलेज के ट्रामा सेंटर में भर्ती किया गया उसके बाद उसे बाल रोग विभाग में स्थानान्तरित किया गया। पिता ने बच्चे की बीमारी की पूरी कहानी बतायी और लिखित सहमति दी।

पिता ने बताया 9 दिन पहले बच्चे को खाँसी आने लगी तथा उसकी नाक बहने लगी। दो दिन बाद बच्चे को बुखार हुआ। माँ ने बच्चे को अस्थायी रूप से बीमारी से छुटकारा दिलाने के लिए सरसों का तेल और विक्स लगाया। चूंकि वह रात का समय था इसलिए ऐसा किया गया, क्योंकि रात के समय बाहर किसी डॉक्टर के पास जाना संभव नहीं था। अगले दिन माँ आंटी के साथ जो पड़ोस में रहती थी, 6 किमी दूर एक होम्योपैथिक डॉक्टर के पास गयी। उन्होंने एक ऐलोपैथिक दवाई Ibochite बुखार के लिए देने को कहा। इसमें कुल 120 रू0 खर्च हुए। उन्होंने होम्योपैथिक डॉक्टर का चुनाव किया क्योंकि होम्योपैथिक दवाई बच्चों के लिए अच्छी होती है। दवा लेने के बाद भी बच्चे को कोई फायदा नहीं हुआ।

पिता ने बच्चे को गोरखपुर मेडिकल कॉलेज के सेवनिवृत्त बाल रोग विभाग के विभागाध्यक्ष को प्राइवेट में दिखाने का निश्चय किया। वह उनके घर से 20 किमी दूर रहते थे, वहाँ बस द्वारा ले जाने के लिए उन्होंने 50 रू0 खर्च किये। डॉक्टर ने बताया कि बच्चा सर्दी और खाँसी से पीड़ित है। उन्होंने तीन प्रकार की दवाइयाँ दी, कफ के लिए सिरप, बुखार के लिए एंटीबायोटिक सिरप, कुछ पिसी दवाइयों की पुड़िया। उस डॉक्टर ने दिखाने की कोई फीस नहीं ली क्योंकि वे व्यक्तिगत रूप से उन्हें जानते थे। उन्होंने सिर्फ दवाओं के लिए 200 रू0 लिये। किसी जाँच के लिए नहीं कहा। दवा की कुछ खुराक लेने के बाद थोड़ी देर के लिए कुछ बुखार कम हुआ परन्तु फिर बढ़ गया। अगले दिन पर्चा ले कर बस द्वारा फिर प्राइवेट डॉक्टर के पास ले कर गये। डॉक्टर ने अगले चार दिन तक उसी दवा को लेने को कहा। पिता दवा खरीद कर ले आये और लगातार उसे देते रहे। जबकि अगली पूरी रात बच्चा बुखार से तपता रहा, इसलिए परिवार के लोगों ने दूसरे डॉक्टर को दिखाने का निश्चय किया।

अगले दिन वह फिर से गोरखपुर बस द्वारा दूसरे डॉक्टर के पास गये जो एक प्रसिद्ध बाल रोग विशेषज्ञ था। उसने एक्स–रे करने और खून की जाँच की सलाह दी। रिपोर्ट देखने के बाद उन्होने बताया कि बच्चे के फेफड़े में पानी भर गया है और वह निमोनिया से पीड़ित है उसे कहीं भर्ती करने की आवश्यकता है। लगभग 500 रू0 उस पर खर्च हुए। चूंकि परिवार के लोग पूरी तरह से मानसिक रूप से इसके लिए तैयार नहीं थे, उन्हें तैयारियाँ करने के लिए कुछ समय की आवश्यकता थी, वे बच्चे को वापस घर ले आये। वे पहले डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर द्वारा बतायी गयी बातों को दूसरी सलाह के तौर पर पूछना चाहते थे। इसलिए माता–पिता फिर से पहले वाले बाल रोग विशेषज्ञ से सलाह लेने के लिए गये। पहले

बाल रोग विशेषज्ञ ने बच्चे के फेफड़े में पानी भरा होने की बात की पुष्टि की और सलाह दी कि या तो उसे लखनऊ मेडिकल कॉलेज ले जाओ या अन्य विशेषज्ञ के पास आगे के इलाज के लिए ले जाओ।

तीसरे विशेषज्ञ ने बच्चे की जाँच की , एक्स–रे रिपोर्ट देखा और दूसरा एक्स–रे करवाने की सलाह दी। दूसरे एक्स–रे की रिपोर्ट को देख कर बताया कि फेफड़ों में पानी भरा है, परन्तु इसके अलावा फेफड़ों में कन्जेशन भी है। इसमें 700 रू0 खर्च हुए। तब परिवार के सदस्यों ने लखनऊ मेडिकल कॉलेज ले जाने का निर्णय लिया। वे रेलगाड़ी के द्वारा 300 किमी की यात्रा 6 घंटे में तय करके पहुँचे और इसके लिए उन्होने 500 रू0 किराया दिया। उन्होंने उसे मेडिकल कॉलेज में भर्ती करवाया जहाँ एक्स–रे और खून की जाँच करवाने के लिए कहा गया। इसके अतिरिक्त एक पतला पाइप शरीर में डाला गया। इसमें लगभग 3000/– रू0 का खर्च आया पर धीरे–धीरे बच्चे की तबियत में सुधार हो रहा है।

जानकारी का साराशं :–

1. पहला लक्षण प्रकट होने से आखिरी चिकित्सा सुविधा तक के बीच 9 दिन का समय बीता।
2. क्रमवार स्वास्थ्य सुविधा/ उपचारक जिनसे परामर्श लिया गया :
   a. दिन 1 : गाँव में होम्योपैथिक डॉक्टर के द्वारा।
   b. दिन 2 : गोरखपुर में पहले प्राइवेट डॉक्टर के द्वारा।
   c. दिन 3/4 : गोरखपुर में दूसरे प्राइवेट डॉक्टर के द्वारा।
   d. दिन 4/5 : गोरखपुर में तीसरे प्राइवेट डॉक्टर के द्वारा।
   e. दिन 6 : लखनऊ मेडिकल कॉलेज में भर्ती करना।
3. बच्चे के घर से आखिरी चिकित्सा सेवा प्राप्त करने के बीच की दूरी : 300 किमी।
4. लगभग 5000/– रू0 से अधिक खर्च हुए।

क्यों चुना

- अस्थायी रूप से फायदा प्राप्त करने के लिए घरेलू चिकित्सा दी गयी चूंकि रात में कोई इलाज संभव नहीं था।
- पिता बाहर काम करते थे इसलिए देखभाल के लिए पड़ोसियों की सलाह ली।
- प्राइवेट डॉक्टर से सलाह लिया जो ऐलोपैथिक इलाज करता था।
- विश्वास था कि दूसरी दवा बच्चे के लिए अच्छी है।
- सेवा निवृत्त सरकारी डॉक्टर के पास गए, जिसे वे व्यक्तिगत रूप से जानते थे।
- दूसरे प्राइवेट डॉक्टर के पास गये।
- रेफर : तीसरे प्राइवेट डॉक्टर के पास या फिर मेडिकल कॉलेज।
- माता–पिता ने फिर से प्राइवेट डॉक्टर को चुना।

- बच्चे को दूसरी चिकित्सा सेवा प्राप्त करने के लिए भेजा गया जिससे डॉक्टरों के इलाज से वह पूरी तरह से ठीक हो जाये।

केस–09

विशिष्ट आई डी: उ0प्र0 /केस स्टडी/ 25 **जिलाः ग्रामीण क्षेत्र महोबा**

यह डेढ़ साल का बच्चा महोबा जिले के चरखारी ब्लाक के चिंतिपुरा गाँव में रहता है। बच्चा महोबा में जिला अस्पताल में भर्ती था, माता–पिता को वहीं पर इसमें भागीदारी करने के लिये सम्पर्क किया गया। माँ ने बीमारी की पूरी सूचना देने के लिये सहमति दी।

बच्चा 10 दिन पहले बीमार हुआ था। उसे थोड़ी सी सर्दी हुयी थी, वह दूध नहीं पी रहा था और जो कुछ भी पीता था उल्टी कर देता था। बच्चे को दस्त भी हो रहे थे तथा साँस लेने में भी परेशानी हो रही थी। माँ ने इन लक्षणों पर ध्यान दिया। बच्चे को बीमारी से छुटकारा पाने के लिए घरेलू चिकित्सा दी गयी। बच्चे को भटकटइया पौधे की जड़ को पीस कर तथा लौंग को पीस कर पाउडर बना कर माँ के दूध में मिला कर दिया गया, लौंग को दूध में भून कर मिलाया गया था। एक दिन के लिए घरेलू उपचार दिया गया। अपने आपसे शिशु को कोई दवा नहीं दी गई। चूंकि बच्चे को घरेलू उपचार से कोई फायदा नहीं हुआ, बच्चे को एक अप्रशिक्षित डॉक्टर (झोलाछाप डॉक्टर) जो 1 किमी की दूरी पर था, के पास ले गये। देखभालकर्ता उस डॉक्टर को जानते थे, उसके पिता भी उसी गाँव में प्रैक्टिस करते थे, उसे डॉक्टरी अपने दिवंगत पिता से विरासत में मिली थी। उसने बीमार शिशु को कुछ दवाइयाँ दी, उसका इलाज तीन दिन तक चला। जब बच्चे की स्थिति ठीक नहीं हुई, उसने उसे रेफर कर दिया। उसने माता–पिता को महोबा ले जाने की सलाह दी क्योंकि उसे निमोनिया था। उसने एक तेल दिया और माता–पिता से उसे बच्चे को लगाने के लिए कहा। यदि ठीक हो जाता है तो वापस जाओ यदि फिर भी बच्चे की स्थिति ठीक नहीं होती है तो महोबा जिला अस्पताल ले जाओ। दवाखाने में शिशु के इलाज में 210 रू0 खर्च हुए। उसके बाद शिशु को जिला अस्पताल महोबा ले गए जो उनके घर से 22 किमी दूर था। बच्चे को महोबा ले जाने के लिए उन्होंने आम यातायात के साधन का प्रयोग किया और उसके लिए 40 रू0 दिये। पिता ने महोबा जिला सरकारी अस्पताल ले जाने का निर्णय इसलिए लिया क्योंकि उनके दोस्त ने भी उन्हें ऐसा करने को कहा। उनके दोस्त ने अपने बच्चे का भी इलाज महोबा जिला सरकारी अस्पताल में कराया था और वह ठीक हो गया था। पिता ने अपने बच्चे का महोबा जिला अस्पताल में इलाज करवाया और वह ठीक हो गया। बच्चे की माँ, दादा–दादी, ने भी फैसला लेने में मदद की। जिला अस्पताल में बच्चे का एक्स–रे तथा खून की जाँच की गयी। बच्चे को दवाइयाँ और इंजेक्शन दिये गये। पहले बच्चे की दशा ठीक नहीं थी पर अभी ठीक है।

जानकारी का साराशं :–

1. पहले लक्षण के पता चलने और आखिरी चिकित्सा सुविधा तक लगभग 10 दिन का समय बीत गया।
2. क्रमवार स्वास्थ्य सुविधा / उपचारक जिनसे परामर्श लिया गया :
    a. दिन–1 इलाज के लिए कोई प्रतिक्रिया नहीं।

b. दिन 2–6 प्राइवेट डॉक्टर।

c. दिन 7–11 महोबा जिला अस्पताल में भर्ती।

3. बच्चे के घर से आखिरी चिकित्सा सेवा प्राप्त करने की दूरी : 22 किमी।
4. लगभग खर्च हुआ पैसा 300 रू0 + ठीक से पता नहीं।

क्यों चुना

- एक दिन के लिए घरेलू उपचार किया।
- बच्चे को अप्रशिक्षित डॉक्टर के पास 3 दिन इलाज के लिए ले जाया गया उसके बाद रेफर किया।
- अप्रशिक्षित डॉक्टर क द्वारा बच्चे के शरीर में मालिश करने के लिए तेल दिया गया।
- बच्चे को महोबा में जिला अस्पताल में ले जाया गया।

केस–10

विशिष्ट आई डी: उ0प्र0 /केस स्टडी/ 26 **जिलाः ग्रामीण क्षेत्र गया**

यह 14 माह का बच्चा अपने माता–पिता के साथ बिहार में गया के ग्रामीण इलाके में रहता है। बच्चा बीमार पड़ गया था और उसे गया बिहार में अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया था। माँ ने प्रोजेक्ट टीम को बीमारी के बारे में पूरी तरह से बताया।

माँ ने बताया बच्चा लगभग 6 दिन पहले बीमार हो गया, उसने पहले उल्टी करना शुरू किया, उसके तुरन्त बाद उसे दस्त होने लगे। यह पूरी रात में लगभग 5–6 बार हुआ। माँ इसके लिए चिन्तित हुई पर उसने कोई घरेलू उपचार नहीं किया। सुबह बच्चे को एक झोलाछाप डॉक्टर के पास ले जाया गया। उसने एक सिरप उल्टी और दस्त के लिए दिया और उसे दिन में तीन बार तब तक देने को कहा जब तक बच्चा ठीक ना हो जाए। बच्चे को 2 दिन तक सिरप दिया गया परन्तु उसे कोई फायदा नहीं हुआ।

तीसरे दिन माता–पिता अपने घर से 2.5 किमी दूर जिला अस्पताल ले गये। माता–पिता ने अस्पताल जाने के लिए प्रति व्यक्ति 15 रू0 के हिसाब से खर्च किए। जिला अस्पताल में डॉक्टरों ने तीन प्रकार के सिरप दिये, दवाइयाँ और इंजेक्शन लिखें, जिन्हें बाहर से खरीद कर लाया गया। माँ दवाइयाँ और इंजेक्शन जिला अस्पताल के बाहर के मेडिकल स्टोर से खरीद कर लायी। उसने केमिस्ट से बच्चे को इंजेक्शन लगवाया और इसके लिए उसे 5 रू0 दिये। माँ ने सरकारी अस्पताल में लिखे गए सिरप को अगले दो दिनों तक दिया। बच्चे के दस्त, उल्टी तो बंद हो गयी, परन्तु उसे हँफनी (पसली चलना) और साँस लेने की गति धीमी हो गयी। बच्चे ने दूध पीने से मना कर दिया परन्तु उसे बुखार नहीं था।

माँ बच्चे की दादी के साथ बच्चे को प्राइवेट डॉक्टर के पास 5 किमी की दूरी पर ले गयी, जिसमें प्रति व्यक्ति 10 रू0 खर्च हुआ। डॉक्टर ने 50 रू0 फीस ली उसने ग्लूकोज चढ़ाया तथा इंजेक्शन दिया। बाजार से इंजेक्शन खरीदने में 100 रू0 खर्च हुए। अतः कुल मिला कर लगभग 300 रू0 दवा, यातायात, डॉक्टर की फीस व अन्य खर्चों में खर्च हुए। उसे ऑक्सीजन दिया गया तथा पूरे दिन भर्ती रखा गया। देखभालकर्ताओं ने प्राइवेट डॉक्टर का चुनाव बच्चे के मामा के कहने पर किया था। बच्चे की तबियत ठीक नहीं हुयी। उसी रात को बच्चे को गया बिहार, में स्थित सरकारी अस्पताल अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल कॉलेज एण्ड हास्पिटल (ANMMCH) ले जाया गया, जिसकी दूरी उनके घर से 7 किमी थी। बच्चे को उसकी माँ ,दादी और मामा के साथ ले जाया गया। उसे मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया। भर्ती होने के समय बच्चा दूध नहीं पी रहा था। उसे पंजरा (पसली चलने की घरेलू भाषा) मार रहा था और वह सुस्त भी था। उसे इंजेक्शन और ऑक्सीजन दिया गया। सुबह, बच्चे को फिर से इंजेक्शन और भाप दिया गया तथा एक्स–रे लिया गया। डॉक्टर ने बताया कि बच्चे का कफ जम गया है और उसे पंजरा भी है। बच्चा तीन दिन से भर्ती है और अब उसे आराम हैं। उसे रोज लगातार इंजेक्शन और दवाइयाँ दी जा रही हैं।

जानकारी का साराशं :–

1. पहला लक्षण पता होने के बाद से आखिरी जाँच तक लगभग 6 दिन का समय बीत गया।
2. क्रमवार स्वास्थ्य सुविधा/ उपचारक जिनसे परामर्श लिया गया :
   a. दिन 1 : इलाज के प्रति कोई प्रतिक्रिया नहीं।
   b. दिन 2–3 : झोलाछाप डॉक्टर।
   c. दिन 4–5 : प्राइवेट डॉक्टर घर से 5 किमी की दूरी पर।
   d. दिन 6– अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल कॉलेज एण्ड अस्पताल में भर्ती।
3. बच्चे के घर से आखिरी चिकित्सा सुविधा तक 7 किमी की दूरी।
4. लगभग 400 + रू0 खर्च हुए।

क्यों चुना

- बच्चे को अप्रशिक्षित डॉक्टर के पास ले गये।
- बच्चे को जिला अस्पताल ले गये (दवाओं और इंजेक्शन की कमी के कारण)।
- दवाओं और इंजेक्शन को बाहर से खरीद कर लाया गया, बच्चे को केमिस्ट से इंजेक्शन लगवाया गया। बच्चे को घर वापिस लाया गया।
- स्थिति ठीक नहीं हुयी। अतः दूसरी स्वास्थ्य सेवा में ले जाया गया।

केस–11

विशिष्ट आई डी: उ0प्र0 /केस स्टडी/ 27 **जिलाः ग्रामीण क्षेत्र गया**

यह चार महीने का बच्चा अपने माता–पिता के साथ गया के ग्रामीण क्षेत्र में रहता है। बच्चा बीमार हो गया था और गया, बिहार में अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल कॉलेज में भर्ती किया गया था। दादी ने बीमारी की पूरी कहानी टीम के सदस्यों को बताने के लिये अपनी सहमति दी।

बच्चा 4 दिन पहले बीमार हुआ था। बच्चे को खोखी (गाँव की भाषा में सर्दी खाँसी) के साथ बुखार तथा पँजरा (गाँव की भाषा में पसली चलना) हुआ था। जब दादी ने इन लक्षणों को देखा तो उसने गर्म पानी की भाप दी तथा कपूर को सरसों के तेल में मिला कर छाती में उसकी मालिश की तथा पसली और गले में उसे मला। दादी ने बच्चे की दशा के बारे में उसके दादा से भी सलाह मशवरा किया। उन्होंने बच्चे को मऊ गाँव में प्राइवेट डॉक्टर के पास ले जाने की सलाह दी, जो उनके घर से 1 किमी की दूरी पर था। डॉक्टर ने सिरप, गोली और इंजेक्शन दिया। इसमें कुल 350 रू0 खर्च हुए। दादा ने धान की फसल को बेच कर पैसा इकट्ठा किया। चूंकि बच्चे को तीन दिन तक कोई फायदा नहीं हुआ, दादा ने बच्चे को पास के टिकारी गाँव में ले जाने का निश्चय किया। टिकारी का दवाखाना बंद था। इसके बाद दादा ने अपने एक दोस्त जो गया में रहते थे, से सलाह ली। दादा के दोस्त ने उन्हें बिहार गया में अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल कॉलेज में ले जाने की सलाह दी। अनुग्रह नारायण मेडिकल कॉलेज एण्ड हास्पिटल में डॉक्टरों ने बताया कि बच्चा निमोनिया से पीड़ित है और बच्चे को भर्ती कर लिया। एक एक्स–रे किया, ग्लूकोज़ चढ़ाया, ऑक्सीजन दी। शीघ्र ही बच्चे को डिस्चार्ज कर दिया गया, खाँसी पहले से कम हो गयी थी। परिवार ने 500 रू0 खर्च किए जो दादा ने धान की फसल बेच कर इकट्ठा किये थे।

दादा ने बताया कि पहले वे बच्चे को मेडिकल कॉलेज ले जाने में हिचकिचा रहे थे। क्योंकि उनके रिश्तेदार की मृत्यु मेडिकल कॉलेज में इलाज के दौरान हुयी थी।

परन्तु अब वे यहाँ के इलाज से संतुष्ट हैं और यह महसूस कर रहें हैं कि धीरे–धीरे उनका बच्चा पूरी तरह से ठीक हो जायेगा।

जानकारी का साराशं :–

1. पहले लक्षण प्रकट होने से आखिरी चिकित्सा सुविधा तक 4 दिन का समय खत्म हुआ।
2. क्रमवार स्वास्थ्य सुविधा/ उपचारक जिनसे परामर्श लिया गया :
   a. दिन 1-3 : बगल के गाँव का झोलाछाप डॉक्टर।
   b. दिन 3 : दूसरे बगल के गाँव का झोलाछाप डॉक्टर।
   c. दिन 4 : गया के अनुग्रह नारायण मेडिकल कॉलेज में भर्ती किया गया।
3. बच्चे के घर से आखिरी चिकित्सा सुविधा प्राप्त करने तक की दूरीः 10 किमी।
4. लगभग 500 रू0 खर्च हुए।

क्यों चुना

- घरेलू चिकित्सा।
- दादा–दादी के द्वारा चिकित्सा के लिए फैसला लेना।
- दो प्राइवेट डॉक्टरों के पास गये, दोनों ही पास के गाँव के थे।
- पैसे की कमी को फसल बेच कर पूरा करना।
- परिवार के मित्र की सलाह पर चिकित्सा सेवा के लिए ले जाना।

केस–12

विशिष्ट आई डी: उ0प्र0 /केस स्टडी/ 30 **जिलाः ग्रामीण क्षेत्र मेरठ**

यह 2 माह की बच्ची मेरठ जिले के मवाना ब्लाक के झुनझुनी गाँव में रहती थी। बच्ची की माँ उसकी बीमारी के बारे में पूरी जानकरी देने को सहमत हो गई जब प्रोजेक्ट टीम उस गाँव में प्रोजेक्ट से जुड़ी गतिविधियों के लिए पहुँची। बच्ची की माँ अशिक्षित गृहणी थी और पिता दैनिक कमाई वाला मजदूर था। बच्ची एकल परिवार में रहती थी।

बच्ची की माँ ने बताया कि बच्ची आपरेशन द्वारा एक प्राइवेट अस्पताल में पैदा हुई। वह जन्म के समय रोई नहीं। बच्ची जन्म के समय स्वस्थ्य थी। माता–पिता अस्पताल में एक दिन और रात रूके, फिर वापस घर आ गये। लगभग 15 दिन पूर्व बच्ची कम खाने लगी और उसकी पसली भी चलने लगी थी। माँ ने बच्ची की सूती कपड़े से लगभग एक घंटे तक सिकांई की। बच्ची को कोई फायदा नहीं हुआ। तब बच्ची की माँ उसे गाँव के ही एक स्थानीय डॉक्टर के पास ले गई। उसने बच्ची की जाँच की परन्तु कोई दवा नहीं दी। डॉक्टर ने बच्ची के माता–पिता को सलाह दी कि वो उसे लेकर मवाना के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र लेकर जायें। बच्ची के माता पिता उसे लेकर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मवाना गये जो उनके घर से 13 किलोमीटर दूर था। माता–पिता बच्ची को लेकर पैदल सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र गये और वापस आये क्योंकि उनके पास आम यातायात के साधन से जाने के पैसे नहीं थे। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पर डॉक्टरों ने कहा कि यहाँ पर कोई दवाई नहीं है। डॉक्टरों ने माता–पिता को बच्ची को एक प्राइवेट डॉक्टर के पास जाने की सलाह दी जो उस प्राइवेट अस्पताल से सम्बन्धित था। माता–पिता बच्ची को लेकर प्राइवेट अस्पताल गये जैसा कि सरकारी डॉक्टर ने सुझाव दिया था। बच्ची का इलाज प्रारम्भ करने के लिए माता पिता को 500 रूपये प्राइवेट अस्पताल मे जमा करने को कहा गया। चूंकि, माता–पिता के पास रूपये नहीं थे, इसलिए वो बच्ची को लेकर घर वापस आ गये। बच्ची की घर पहुँचने के 3 घंटे बाद मृत्यु हो गयी।

सूचना का सारांशः–

1. पहला लक्षण प्रतीत होने से लेकर आखरी स्वास्थ्य सुविधा में भर्ती होने तक बर्बाद समय :– 15 दिन।
2. क्रमवार स्वास्थ्य सुविधा/ उपचारक जिनसे परामर्श लिया गया :
   a. बगल के गाँव का स्थानीय डॉक्टर।
   b. सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र।
   c. प्राइवेट डॉक्टर।
3. बच्ची के घर से आखिरी स्वास्थ्य सुविधा जाने तक की दूरी : 13 किलोमीटर।

क्यों चुना

- केस की मृत्यु ।
- फील्ड कार्य के दौरान साक्षात्कार किया।
- घरेलू इलाज का प्रयोग।
- स्थानीय डॉक्टर के पास गये।
- आर्थिक तंगी :– स्वास्थ्य सुविधा तक जाने के रूपये नहीं थे, फीस देने के भी रूपये नहीं थे।
- सरकारी सुविधा गया परन्तु भर्ती करने से मना कर दिया।
- प्राइवेट अस्पताल का असहानुभूतिक व्यवहार, भर्ती करने से मना कर दिया क्योंकि माता–पिता के पास रूपये नहीं थे।